20-3-67 ओम शान्ति प्रातः क्लास रि:- भोले नाथ से .....

अभी बच्चे समझते है कि बिगड़ी को बनाने वाला एक ही है। भक्ति मार्ग में अनेकों पास जाते है कितने तीर्थ यात्रायें आद करते है, परन्तु बिगड़ी को बनाने वाला पतितों को पावन बनाने वाला तो एक ही है। सदगति दाता गाइड लिबरेटर भी वो एक ही है। अब गायन है परन्तु अनेक मनुष्य अनेक धर्म अनेक मठ, पंथ शास्त्र होने कारण अनेक रस्ते ढूंढते रहते है। सुख और शान्ति के लिये। सत्संगों में जाते तो है ना। जो नहीं जाते है वो तो मायावी मस्ती में ही मस्त रहते है। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि अब कलियुग का अन्त है। मनुष्य यह नहीं जानते है कि सतयुग कब होता है। अब क्या है। तुम बच्चे इसके कन्ट्रास्ट को अच्छी रीती जानते हो। बाप ने समझाया है कि स्वर्ग में सुख है नर्क में दुःख है। पुरानी दुनियां में जरूर दुःख ही होता है। इस पुरानी दुनिया में अनेक मनुष्य है अनेक धर्म है। अनेक प्रकार के झगड़े आद है। नई दुनियां में यह सब नहीं होगा। ला ऐसे कहता है। तुम कोई को भी समझा सक्ते हो कि यह है कलियुग। सतयुग पास्ट हो गया है। वहां एक ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था और कोई धर्म नहीं था। बाबा ने बहुत बार समझाया है फिर भी समझाते है। जैसे शंकराचार्य चुनार में प्रदर्शनी पर आया। तो उनको भी नई दुनियां और पुरानी दुनियां का फर्क दिखाना चाहिये था। भल वो कुछ भी कहे। कोई 10 हजार वर्ष कल्प की आयु कहते है कोई 30 हजार वर्ष भी कहते। अनेक मतें है ना। अब उनके पास तो है ही शास्त्रों की मतें। अनेक शास्त्रों की मत, अनेक मनुष्यों की मत, शास्त्र भी लिखे तो मनुष्यों ने ही है ना। देवतायें कोई शास्त्र नहीं लिखते है। सतयुग में देवी गुणों वाले मनुष्य होते है। उनको कहा जाता है देवता। मनुष्य होते हैं कलियुग में। सतयुग में देवता धर्म होता है। उनको मनुष्य भी नहीं कहा जा सकता है। तो जब कोई मित्र सम्बन्धी आद भी मिलते है तो उनको भी बैठ यह सुनाना कि विचार की बात है कि नई दुनियां में कितने थोड़े मनुष्य थे। पुरानी दुनियां में कितनी वृधी हो गई है। सतयुग में सिर्फ एक ही धर्म था। देवी गुण होते ही है देवताओं में। मनुष्यों में नहीं होते हैं। तब तो मनुष्य जाकर देवताओं के आगे नमस्ते करते है। देवताओं की महिमा गाते है। जानते है कि वो स्वर्गवासी थे। हम नर्कवासी कलियुग वासी है। मनुष्यों में देवी गुण हो नहीं सक्ते है। कोई कहे फलाने में बहुत अच्छे गुण है। बोलो नहीं। देवीगुण तो होते ही है देवताओं में क्यों कि वो पवित्र है। यहां पवित्र ना होते है तो गुण भी हो नहीं सक्ते है। क्योंकि आसुरी रावण राज्य है ना। इसको ही शैतानी राज्य भी कहा जाता है। शंकराचार्य को भी नई दुनियां और पुरानी दुनियां का कन्ट्रास्ट दिखाना चाहिये था। नये झाड़ में देवी-गुण वाले देवतायें रहते है। फिर झाड़ पुराना होता है। रावण राज्य में देवीगुणों वाले हो नहीं सक्ते है। सतयुग में आदी सनातन देवी देवताओं का प्रवृती मार्ग था। हम प्रवृती मार्ग वालों की ही महिमा गाई हुई है। सतयुग में हम पवित्र देवी देवतायें थे। सन्यासी लोगों को इन देवताओं की महिमा वुधी में आवेगी ही नहीं। क्योंकि वो तो है ही निवृती मार्ग वाले। सतयुग में पवित्र प्रवृती मार्ग था। सन्यास मार्ग, था ही नहीं। कितनी पुआइन्टस मिलती है। परन्तु सभी पुआइन्टस किसकी वुधी में रह नहीं सक्ती है। पुआइन्टस भूल जाते है, इसलियें ही फेल हो जाते है। देवीगुण धारण नहीं करते है। एक ही देवीगुण अच्छा है जास्ती कोई से भी ना बोलना। मीठा बोलना बहुत थोड़ा बोलना चाहिये। जो बहुत मीठा धीरे और कम बोलते है तो समझा जाता है कि यह किसी रायल घर का है। मुख से तो सदैव रत्न निकले। सन्यासी अथवा कोई भी हो तो उनको पुरानी और नई दुनियां का कन्ट्रास्ट बताना है। सतयुग में देवी गुणों वाले देवतायें थे। वो प्रवृती मार्ग था। तो सन्यासियों का भी धर्म अलग है। फिर भी यह तो समझते है ना कि नई दुनियां सतोप्रधान होती है। अभी तमोप्रधान है। आत्मा तमोप्रधान होती है तो शरीर भी तमोप्रधान मिलता है। अभी है ही पतित दुनियां। सबको पतित ही कहेंगे। वो है पावन सतोप्रधान दुनियां। वो ही नई दुनियां थी सो अब पुरानी हुई है। आत्मायें सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है। क्योंकि

तमोप्रधान दुनियां है कितने हंगामे हैं। क्यों कि मनुष्य नास्तिक बन गये है। धणी, बाप को नही जानते है। धणी के नही है। नां रचता नां ही रचना को जानते है गोया नास्तिक ठहरे। इसलिये कितना हंगामा है। रचता और रचना को जानने वाले को आस्तिक कहा जाता है। तुम सन्यास धर्म वाले तो नई दुनियां को जानते ही नही हो। तुम तो वहां आते ही नही हो। हम तो आते है। बाप ने समझाया है अभी सभी आत्मायें तमोप्रधान बन गई हैं। फिर सतोप्रधान कौन बनावे सभी आत्माओं को। वो तो बाप ही बना सकते है। सतोप्रधान नई दुनियां में थोड़े मनुष्य रहते है। बाकी सब है मुक्ति धाम में। ब्रह्म तो तत्व है जहां पर कि हम आत्मायें रहती है। बाकी सब है मुक्ति धाम में। आत्मा तो अविनाशी है। यह अविनाशी नाटक है जिसमें सब आत्माओं का पार्ट नूंधा हुआ है। कब नाटक शुरू हुआ है यह कब कोई बता नही सकते है। यह तो अनादी ही ड्रामा है नां। बाप को तो सिर्फ पुरानी दुनियां को नई ही बनाना पड़ता है। ऐसे नही कि बाप नई सृष्टि रचते है। जब पतित होते हैं तब ही पुकारते है। सतयुग में कब कोई पुकारते ही नही है। है ही पावन दुनियां। रावण पतित बनाते है। परमपिता परमात्मा आकर पावन बनाते है। आधा-2 जरूर कहेंगे। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात आधा-2, ज्ञान से दिन होता है। वहां अज्ञान है नही। भक्ति मार्ग को अंधेरा मार्ग कहा जाता है। देवतायें पुनर्जन्म लेते-2 फिर अंधेरे में आते है। इस लिये इस सीढ़ी में दिखाया है कि मनुष्य कैसे सतो रजो तमो में आते है। तमोप्रधान दुनियां में सतोप्रधान कोई हो नही सकते है। सतोप्रधान होते ही सतयुग में है। अब सबकी जड़जड़ीभूत अवस्था है। बाप आये है ट्रान्सफर करने। अर्थात मनुष्य को देवता बनाने। जब देवतायें थे तो आसुरी गुणों वाले मनुष्य नही थे। अब फिर उन आसुरी गुणों वालों को दैवीगुणों वाला कौन बनावे। अभी तो अनेक धर्म अनेक मनुष्य हैं। अर्थात झगड़ते रहते है। सतयुग में एक धर्म। दुःख की कोई बात नही। शास्त्रों में तो बहुत ही दन्त कथायें है। जो कि जन्म जन्मान्तर ही पढ़ते आये है। बाप कहते है यह सब भक्ति मार्ग के शास्त्र है। उनसे मुझे प्राप्त कर नही सकते है। मुझे तो एक ही बार आकर सबकी सदगति करनी है। वापस कोई जा नही सकते है। बहुत धैर्य से बैठ समझाना चाहिये। हंगामा भी नां हो। उन लोगों को अपना ही अहंकार तो रहता है नां। साधु सन्तों के साथ फालोवर्स भी रहते है नां। झट कह देंगे इनको भी ब्रह्मा कुमारियों का जादु लग गया है। सयाने मनुष्य जो होंगे वो कहेंगे कि विचार करने योग्य बात है। प्रदर्शनी में तो अनेक प्रकार के आते है नां। समझाने का तरीका ऐसा होना चाहिये जैसे कि बाबा धीरज से समझा रहे है। बहुत जोर से भी बोलना नही चाहिये। प्रदर्शनी में तो बहुत कठे हो जाते है नां। फिर कह देना चाहिये कि आप कुछ समय देकर एकान्त में आये समझेंगे तो आपको रचता और रचना का राज समझावेंगे। रचता की आदमध्यअन्त का ज्ञान रचता ही समझावेंगे। बाकी तो सभी नेती-2 करके ही जाते है। कोई भी मनुष्य जान नही सकते है। ज्ञान से सदगति हो जाती है फिर ज्ञान की दरकार नही रहती है। यह नालेज सिवाय बाप के कोई समझा नही सकते है। समझाने वाला कोई बजुर्ग होगा तो लोग समझेंगे कि यह भी अनुभवी है। जरूर सत्संग आद किया होगा। कोई बच्ची छोटी समझावेंगी तो कहेंगे यह क्या जाने। तो ऐसे-2 पर बजुर्ग का असर पड़ सकता है। बाप एक ही बार आकर यह नालेज समझाते है सतोप्रधान बनाते है। और ही मातायें बैठ उनको समझावेंगी तो और ही खुशी होगी। बोलो ज्ञान सागर बाप ने ज्ञान का कलश हम माताओं को दिया है। जो हम फिर औरों को देते है। बहुत नम्रता से बोलते रहना है। वो पुस्तक भी दिखाना चाहिये जिसमें है कि शंकराचार्य वाच मातायें नर्क का द्वार है। शिवाचार्य वाच मातायें स्वर्ग का द्वार है। शिव ही ज्ञान का सागर है जो कि हमको ज्ञान सुनाते है। कहते है मैं तुम माताओं द्वारा मुक्ति जीवन-मुक्ति के गेट्स खोलता हूं। और कोई खोल नही सकते। हम अभी परमात्मा द्वारा पढ़ रहे है। हमको कोई मनुष्य नही पढ़ाते है। ज्ञान का सागर एक ही परमपिता परमात्मा है। तुम सभी भक्ति के सागर हो

भक्ति की आथारटी हो। ना कि ज्ञान की। ज्ञान की आथारटी एक मै ही हूँ। महिमा भी एक ही की करते हैं। वो ही ऊँच ते ऊँचा है। हम एक की ही मानते हैं। वो हमको ब्रह्मा तन से पढ़ाते हैं। इसलिये ही ब्र,कु,कु गाये हुये हैं। ऐसे-2 बहुत मीठे रूप से बैठ कर समझाओ। भल कितना भी पढ़ा हुआ हो। ढेर प्रश्न करते हैं। पहले-2 तो बाप पर ही निश्चय कराना है। पहले तो यह समझो कि रचता बाप है वा नही। सभी का रचता एक ही शिव बाबा है। वो ही ज्ञान का सागर है। बाप, टीचर, गुरु है। पहले तो यही निश्चय बुधी मे हो। रचता बाप ही रचना के आद मध्य अन्त का ज्ञान देते हैं। वो ही हम आपको समझाते हैं। वो तो जरूर राईट ही समझावेंगे। फिर कोई प्रश्न उठ नही सकता है। बाप आते ही है संगम पर। सिर्फ कहते हैं कि मुझे ही याद करो तो पाप भस्म हो जावे। हमारा काम ही है पतित को पावन बनाने का। अभी तमोप्रधान दुनियाँ है पतित पावन बाप मिला कोई को भी मुक्ति मिल नही सकती है। सभी गंगा स्नान करने जाते हैं तो पतित ही ठहरे ना। मै तो कहता ही नही हूँ कि गंगा स्नान करो। मै तो कहता हूँ कि मामेकम् याद करो। मै तो सभी आशिकों का माशूक हूँ। सभी एक ही माशूक को याद करते हैं। रचना का क्रियेटर एक ही बाप है। वो कहते हैं कि देही-अभिमानी बन कर मुझ बाप को याद करो तो योगाग्नी से पाप भस्म हो जावे और तुम पावन बन जाओ। यह योग बाप अभी ही सिखाते हैं। जबकि पुरानी दुनियाँ बदल रही है। विनाश सामने खड़ा है। अभी हम देवता बन रहे हैं। बाबा कितना सहज बताते हैं। परन्तु बहुतों को धारना नही होती है। एक बाप को याद करते नही हैं। देहधारियों को तो याद करने लग पड़ते है। बाप के सामने भल सुनते हैं परन्तु एक रस होकर नही सुनते हैं। बुधी और-2 तरफ ही भागती रहती है। भक्ति मे भी ऐसा ही होता है। सारा दिन तो बीट जाता है। बाकी जो समय निश्चित करते हैं उसमे भी बुधी इधर उधर चली जाती है। सबका ही ऐसा हाल होता है। माया है ना। कोई फिर बैठे-2 ध्यान मे ही चले जाते हैं। वो भी समय यों ही गया ना। कमाई तो हुई ही नही। बाप तो कहते है याद मे रहो जिससे ही विकर्म विनाश होंगे। ध्यान मे जाने पर बुधी मे बाप की याद नही रहती है। बहुत घोटाला है इन सब बातों मे। तुमको तो आँख भी बन्द नही करनी चाहिये। याद मे बैठना है ना। आँखें खोलने से डरना नही है। आँखें खुली हुई हो और बुधी मे माशूक ही याद हो। आँखें बन्द की तो गोया अन्धा हो गया। यह कायदा नही है। बाप कहते हैं याद मे बैठो। ऐसे थोड़ेई कहते हैं कि आँखे बंद करो। आँखें बन्द करेंगे वा करके नीचा कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे, बाबा को कैसे देखेंगे। आँखें कब भी बंद नही करनी चाहिये। आँखें बन्द हो जाता है कुछ दाल मे काला होगा। और कोई को याद करते होंगे। बाप तो कहते हैं और कोई को याद किया तो तुम सच्चे आशिक नही ठहरे। सच्चे आशिक बनेंगे तब ही ऊँच पद पावेंगे। मेहनत सारी याद मे है। देह-अभिमान ही रुलाता है। फिर धक्के खाते रहते हैं। और बहुत मीठा भी बनना है। वातावरण भी मीठा। कोई भी आवाज नही। कोई भी आवे तो देखे कि बात कितनी मीठी करते हैं। बहुत साईलेन्स होनी चाहिये। कुछ भी लड़ना झगड़ना नही हो। नही तो जैसे कि बाप टीचर गुरु तीनों की निन्दा कराते हैं। वो तो फिर पद भी बहुत कम पावेंगे। बच्चों को अभी समझ तो मिली ही है। बाप कहते हैं हम तुमको पढ़ाते हैं ऊँच पद पाने। पढ़ कर फिर औरों को पढ़ाना है। खुद भी समझ सकते हो कि हम तो कोई को सुनाता नही हूँ तो क्या पद पाऊँगा। प्रजा नही बनावेंगे तो क्या बनेंगे। योग नही ज्ञान नही तो जरूर पढ़े हुये के आगे अनपढ़े भी होवेंगे। अपने को देखना चाहिये। इस समय नापास हुये कम पद पाया तो कल्प-2 का ही कम पद हो जावेगा। बाप का तो काम है समझाना नही समझेंगे तो अपना ही पद भ्रष्ट करेंगे। कैसे-2 किसको समझाना चाहिये वो भी बाबा समझाते रहते हैं। जितना हो थोड़ा और धीरे बोलेंगे उतना ही अच्छा है। ओम (फिर भी देखना जी) ओम